ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 19 अंक 9 कुल पृष्ठ-8 21 से 27 मार्च, 2024 दयानन्दाब्द 199 सृष्टि सम्वत् 1960853124 सम्वत् 2080 फा. शु-12

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना एवं आर्य समाज नलगोंडा के सौजन्य से

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज नलगोंडा की शताब्दी के उपलक्ष्य में

200 कुण्डीय यजुर्वेदीय महायज्ञ एवं विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक 1, 2 व 3 मार्च, 2024 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द की विचारधारा एवं आर्य समाज के कार्यों के लिए समर्पित रहूंगा – स्वामी रामदेव

आर्य समाज सदैव से ही वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षा के लिए कार्य करता रहा है – स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज सदैव से सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्षरत रहा है – प्रो. विट्ठलराव आर्य

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना एवं आर्य समाज नलगोंडा के सौजन्य से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज नलगोंडा की शताब्दी के उपलक्ष्य में विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 1, 2 व 3 मार्च, 2024 को नलगोण्डा में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक 1 मार्च, 2024 को सायं 4 बजे 200 कुण्डीय यज्ञ से महासम्मेलन का शुभारम्भ हुआ। जिसके ब्रह्मा पद को कन्या गुरुकुल चोटीपुरा, उत्तर प्रदेश की आचार्या डॉ. सुमेधा जी ने सुशोभित किया। उनके साथ उन्हीं के गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों ने मन्त्र पाठ कर यज्ञ को सम्पन्न कराया। यज्ञ का दृश्य अत्यन्त आकर्षक एवं अद्भुत था। हजारों लोग यज्ञ में अपनी आहुतियाँ प्रदान कर रहे थे और कार्यकर्तागण सभी यज्ञ वेदियों पर घृत, सामग्री, समिधा आदि की व्यवस्था बड़ी कुशलता के साथ कर रहे थे। यज्ञ के उपरान्त आचार्या सुमेधा जी का प्रेरणादायक प्रवचन एवं कन्या गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियों द्वारा मनोहर भजन प्रस्तुत किये गये। तदोपरान्त मुख्य मंच से कार्यक्रम संचालित हुआ। कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान की ब्रह्मचारिणीयों ने अपने सुंदर गीतों से कार्यक्रम प्रारम्भ किया। कार्यक्रम के दौरान आर्य जगत की विदुषी बहन अमृता आर्या ने अपने भजनों के माध्यम से महर्षि दयानंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला तथा आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा जी का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। यज्ञ में स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, आचार्या सविता जी, आचार्या वसुधा शास्त्री जी, पं. धर्मपाल शास्त्री जी, आचार्य धनंजय जी, आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी, स्वामी आदित्यवेश जी आदि का सान्निध्य एवं गरिमामयी उपस्थिति रही।

2 मार्च, 2024 को प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक यज्ञ एवं प्रवचन आदि का कार्यक्रम चला। यज्ञ के ब्रह्मा पद को युवा विद्वान् आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक जी ने सुशोभित किया तथा वेद पाठ कन्या गुरुकुल शिवगंज, राजस्थान एवं कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियों तथा गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली के ब्रह्मचारियों द्वारा किया गया। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज का अशीर्वाद सभी को प्राप्त हुआ। यज्ञ के उपरान्त 11 बजे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् मुख्य मंच से समारोह का उद्घाटन सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने की तथा संयोजन सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य ने संभाला। इस सत्र के मुख्य अतिथि विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज रहे। विदित हो कि स्वामी रामदेव जी निजी हवाई जहाज से हैदराबाद पहुंचे और वहां से कारों के काफिले के साथ समारोह स्थल में पधारे। सर्वप्रथम आर्य समाज नलगोण्डा की ओर से प्रधान श्री कृष्णा रेड्डी एवं मंत्री श्री गोपाल रेड्डी व अन्य पदाधिकारियों ने

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेद मार्ग पर चलकर सदैव समाजसेवा का कार्य करता रहूँगा – स्वामी प्रणवानन्द

सच्चा और मजबूत दोस्त केवल ईश्वर ही है, उसी से दोस्ती करो – माया प्रकाश त्यागी

माल्यार्पण द्वारा स्वामी रामदेव जी का स्वागत किया। तत्पश्चात् यज्ञवेदी पर कुछ विशेष मंत्रों से स्वामी रामदेव जी महाराज ने आहुतियाँ प्रदान की, उनके साथ स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, श्री हरिकिशन वेदालंकार, श्री कृष्णा रेड्डी, श्री गोपाल रेड्डी आदि पदाधिकारी भी यज्ञ में सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त मुख्य मंच पर स्वामी रामदेव जी महाराज का खचाखच भरे पण्डाल में उपस्थित हजारों आर्यजनों ने तालियों की गड़गड़ाहट एवं गगनभेदी नारों से स्वागत किया। स्वामी जी को शॉल, श्रीफल आदि देकर भी सम्मेलन के आयोजकों की ओर से अभिनन्दन किया गया। इस उद्घाटन सत्र में पं. माया प्रकाश त्यागी जी, स्वामी आदित्यवेश जी, आर्य भजनोपदेशक श्री कैलाश कर्मठ आदि ने भी अपने विचार रखे।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री प्रो विट्ठलराव आर्य जी ने स्वागत भाषण के साथ पूज्य स्वामी रामदेव जी का हार्दिक अभिनन्दन किया और स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी रामदेव जी द्वारा पूरे विश्व में योग एवं आयुर्वेद की प्रतिष्ठा को शिखर तक पहुंचाने के लिए मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

इस अवसर पर विश्व विख्यात योग गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने अपने विचार रखते हुए कहा कि दक्षिण भारत में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती समारोह में पहुंचकर अपने आपको धन्य महसूस कर रहा हूँ। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के हम पर इतने उपकार हैं कि शब्दों में गिनाये नहीं जा सके। उनकी 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर हम सभी को उनके द्वारा दिखाये गये कार्यों को करने के लिए कृत संकल्पित होना चाहिए। मेरे जीवन का प्रत्येक क्षण आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के कार्यों के लिए समर्पित है। उन्होंने कहा कि मैं आज जो कुछ भी हूँ वह महर्षि दयानन्द जी के जीवन से प्रेरणा लेकर यहाँ तक पहुंचा हूँ। पहले लोग कहा करते थे कि गुरुकुल का पढ़ा–लिखा व्यक्ति क्या कर सकता है, किन्तु मैंने और आचार्य बालकृष्ण जी ने आज योग एवं आयुर्वेद के क्षेत्र में जो स्थान बनाया है उसे देखकर यह कहा जा सकता है कि गुरुकुल में पढ़ने के बाद व्यक्ति क्या नहीं कर सकता। गुरुकुल की पढ़ाई करने के बाद मैं कभी निराश नहीं हुआ बल्कि संघर्ष करते–करते आगे बढ़ता गया और महर्षि द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए योग एवं आयुर्वेद को पूरे विश्व में फैलाने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने कहा कि प्राचीन वैदिक संस्कृति से देश की युवा पीढ़ी को जोड़ने के लिए यह आवश्यक है कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित किया जाये इसके लिए हमने भारत सरकार से भारतीय शिक्षा बोर्ड की मान्यता प्राप्त कर ली है जिसका पाठ्यक्रम प्राचीन आर्ष एवं आधुनिक विषयों को मिलाकर तैयार कराया गया है। इस प्रकल्प को बड़ी तेजी के साथ पूरे देश में फैलाने की योजना तैयार हो चुकी है। इस विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए मैं प्रो. विट्ठलराव आर्य जी के अथक परिश्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा करता हूँ। ईश्वर उन्हें उत्तम स्वास्थ्य दें। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी एक जुझारू एवं संकल्पवान व्यक्तित्व हैं।

सार्वदेशिक सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलते हुए हम सभी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज सदैव से ही वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षा के लिए कार्य करता रहा है और आगे भी प्राण पण से करता रहेगा। स्वामी जी ने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती को दक्षिण भारत में मनाने का संकल्प लिया गया जिसे सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने पूर्ण करने का कार्य किया और उन्होंने आर्य समाज नलगोंडा के शताब्दी वर्ष के अवसर पर इस कार्यक्रम को जोड़कर आर्य समाज नलगोंडा के प्रांगण में 200 कुण्डीय यजुर्वेदीय महायज्ञ एवं विशाल राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के रूप में मनाकर पूरे आर्य जगत में एक मिसाल कायम की है। इस कार्यक्रम में योगगुरु स्वामी रामदेव जी की उपस्थिति से कार्यक्रम में चार चांद लगे हैं। उन्होंने बताया कि स्वामी रामदेव जी महाराज आर्य समाज के कार्यों को बखूबी आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं। स्वामी रामदेव जी ने योग को पूरे विश्व में पहुंचाने का कार्य किया। स्वामी रामदेव जी महाराज महर्षि के सपनों को साकार करने में दिन–रात एक करके कार्य कर रहे हैं। स्वामी जी ने बताया कि आजादी से पूर्व हैदराबाद निजाम के अत्याचारों के खिलाफ आर्य समाज कमर कसकर खड़ा हो गया और उसे परास्त करके ही दम लिया। आर्य समाज के दृढ़ संकल्प का ही परिणाम रहा कि हैदराबाद के निजाम को घुटने टेकने पड़े। इसी तरह से समाज में फैली अनेक कुरीतियों के खिलाफ महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने चिन्तन किया और समाज को नई दिशा दिखाने का कार्य किया। आज इस महासम्मेलन में हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम सदैव वैदिक संस्कृति एवं राष्ट्र रक्षा में अपना योगदान देते रहेंगे। मैं सम्मेलन की सफलता के लिए सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के महामंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार जी एवं उनकी पूरी कार्यकारिणी तथा आर्य समाज नलगोंडा के प्रधान श्री कृष्णा जी रेड्डी, मंत्री श्री गोपाल जी रेड्डी एवं उनकी पूरी कार्यकारिणी को बधाई एवं साधुवाद देता हूँ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने हिन्दी तथा तेलगू दोनों भाषाओं में अपने विचार रखते हुए लोगों को महर्षि द्वारा किये गये कार्यों से अवगत कराया तथा उन्होंने संकल्प व्यक्त किया कि महर्षि के सपनों तथा आर्य समाज के कार्यों को सदैव करते रहेंगे। उन्होंने बताया कि आर्य समाज ने सदैव से ही पाखण्ड, अन्धविश्वास और समाज में फैली अनेक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाकर राष्ट्र निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ही एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने सर्वप्रथम महिलाओं के उद्धार के लिए कार्य करते हुए उन्हें पढ़ने–लिखने का अधिकार दिलाया। महर्षि के परोपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता। आज इस भव्य विशाल प्रांगण में हम सभी उस महामानव की 200वीं जन्म जयन्ती मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। आज हम सभी को उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा लेकर समाज में कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने विश्व विख्यात योगगुरु स्वामी रामदेव जी की प्रशस्ति करते हुए कहा कि स्वामी जी ने अपना अमूल्य समय देकर सम्मेलन में अपनी गरिमामयी उपस्थिति से हमारा मनोबल बढ़ाया और दक्षिण भारत के आर्यों को अपना

शेष पृष्ठ 6 पर

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को शत-शत नमन्

- महाशय पूर्ण सिंह आर्य

एक व्यक्ति के रूप में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारत में फैली मिथ्या धारणाओं, पाखण्डों तथा सामाजिक कुरीतियों के विरोध में अनुपम संघर्ष किया। किसी भी प्रकार के भय से आतंकित नहीं हुए, कोई भी प्रलोभन उन्हें सत्य कथन एवं सत्याचरण से रोक नहीं पाया। किन्तु उन्होंने यह अनुभव किया कि बिना किसी संगठन के वह अपने सत्य संदेश को समग्र भारत अथवा विश्व में विस्तार से नहीं दोहरा पायेंगे। अतः उन्होंने चैत्र प्रतिपदा सम्वत् 1931 को मुम्बई नगर में एकसंस्था की स्थापना की जिसका नामकरण किया गया 'आर्य समाज'। आर्य समाज के प्रमुख दस नियम निर्धारित किए गए जो आर्य समाज के लक्ष्य भी हैं और उनकी प्राप्ति के उपाय भी। वे साधन भी हैं तथा साध्य भी। ये नियमोंपनियम ही अपने आप में क्रांति का बिगुल हैं।

कुछ व्यक्ति नियमोंपनियमों का अवलोकन करके ही पीछे हट जाते हैं। किन्तु आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही इन्हीं लक्ष्यों को क्रियान्वित करने के लिए कार्यरत हैं।

आर्य समाज अपनी शक्ति सामर्थ्य और साधनों का उपयोग करते हुए आगे बढ़ रहा है वैचारिक क्रान्ति सारे संसार में लाने का प्रयास कर रहा है, प्रभु शक्ति देवे।

1. आर्य : महर्षि दयानन्द जी के उपदेश व संदेशानुसार सबसे पहले उद्घोषित किया कि हम सब भारतीय आर्य हैं, हिन्दु नाम तो विदेशी लोगों ने चिढ़के रूप में हमें दिया है हमारे सभी ग्रन्थों में हमारा या हमारे पूर्वज भी श्री राम, श्री कृष्ण आदि सभी आर्य हैं और इस देश का सबसे प्राचीन ऐतिहासिक नाम आर्यव्रत है, बाद में भारतवर्ष है।

2. वेदों की ओर लौटो : आर्य समाज का आधार और मुख्य कार्य वेद और वेदज्ञान का प्रचार व प्रसार है। वेद के आधार पर प्रभु का मुख्य नाम ओ३म् है। प्रभु निराकार सर्वव्यापक सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान है अपने सभी कार्य प्रभु अपने सामर्थ्य से ही करने में सफल है। वह कभी अवतार बन कर जन्म मरण के बन्धन और सीमाओं में नहीं बंधता।

भगवान की काल्पनिक (झूठी) मूर्ति बनाना और मोक्ष के लिए उसको पूजना प्रार्थना करना अवैदिक है, अज्ञान है क्योंकि मूर्ति तो जड़ पदार्थों से बनी है जो न तो सुन सकती है, न चल सकती है। देखना और बातें करना तो दूर। इसका प्रभाव है कि अब मूर्ति पूजक पौराणिक भी वह आस्था व श्रद्धा नहीं रखते हैं औपचारिकता पूरी करते हैं।

3. यज्ञ : आर्य समाज मानव मात्र ही नहीं, प्राणी मात्र की भलाई के लिए पवित्र वेद की ऋचाओं (मन्त्रों) द्वारा, शुद्ध सामग्री, घी व सामग्री के द्वारा प्राण के आधार वायु को शुद्ध करता है इसलिए 'यज्ञेवै श्रेष्ठतम कर्म' अयम या भवन्सयमाभि वेद का आदर्श है ''आयुर्यज्ञेन कल्पताम'' जिससे संसार मेंफैले हुए प्रदूषण को घटाया जा सकता है। सर्वेभवन्तु सुखिना आर्य समाज का ध्येय है।

4. शिक्षा : सभी प्रकार के धार्मिक, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों के सम्पादन के लिए सद्ज्ञान आवश्यक है। अतः आर्य समाज ने सभी के लिए शिक्षा हेतु रात्रि पाठशालाएं, स्कूल, गुरुकुल व कालेज तथा विश्वविद्यालय तक का संचालन किया है।

5. महिला जागरणः स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया है, क्योंकि पौराणिक जगत में आज भी स्त्रीशूद्रोनाधीयताम अर्थात् शूद्रों व स्त्रियों को वेद ज्ञान और साधारण ज्ञान भी प्राप्त करने का अधिकार नहीं, वहीं आर्य समाज की मान्यता है कि जिस प्रकार प्रभु की दी गई सभी वस्तुएं सूर्य, हवा, पानी, अन्न, फल, फूल आदि सभी के लिए है इसी प्रकार प्रभु का वेद ज्ञान भी सभी के लिए है।

6. जन्मगत जातिवाद का विरोधी : आर्य समाज जन्म के आधार पर जाति-पांति को नहीं मानता और शायद संसार में सब से पहली संस्था आर्य समाज ही है, जो कि जन्म को जात का आधार नहीं मानती, बल्कि गुण, कर्म व स्वभाव को जाति का, वर्ग का आधार मानती है क्योंकि वेद में कहा है-जन्मनाजायते शूद्रो' जन्म से सभी शूद्र हैं, अज्ञानी हैं, मूर्ख हैं, एक डॉक्टर व इंजीनियर का लड़का अध्यापक व डॉक्टर बिना पढ़े नहीं बन सकता इसी प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदिकेवल जन्म से नहीं अपितु तदानुसार, शिक्षा दीक्षा, गुण व कर्म करने पर ही ब्राह्मण आदि वर्ग में आ सकते हैं।

7. छूआछूत विरोध : जिस समय आर्य समाज का संगठन बना तब वेद की सच्ची शिक्षा न होने के कारण और धर्म के नाम पर भ्रम व पाखण्ड फैलाने के कारण छूआछूत की भयंकर बीमारी फैली हुई थी। इसका विरोध आर्य समाज और महत्मा गांधी जी व कांग्रेस ने बड़े ही वेग से किया। इस छूआछूत की बीमारी ने देश की बड़ी हानि की है। अतः इसका उन्मूलन होना चाहिए।

8. राष्ट्रप्रेम तथा स्वाधीनता का सन्देश : आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने सर्वप्रथम राष्ट्रप्रेम व स्वाधीनता का संदेश दिया। जननी और जन्म भूमि स्वर्ग से भी महान है, का संदेश देने वाला आर्य समाज ही है।

9. कुरीतियों का निवारण : देश में फैली सैकड़ों कुरीतियों जैसे बाल विवाह, स्त्री पुनर्विवाह का न होना, छुआछूत, अन्धविश्वास भूत प्रेत आदि अनेक बुराइयोंका आर्य समाज ने निराकरण किया है और अब भी कर रहा है।

10. वर्तमान संघर्ष : अतीत में आर्य समाज ने काफी समाज सुधार के कार्य कर जन-साधारण को बचाया है अब इस वैज्ञानिक प्रचार व प्रसार के युग में आर्य समाज को एक बार फिर संगठित होकर रोज नए-नए पैदा होने वाले भगवानों (गुरुवरों), दूरदर्शन और सरकार द्वारा लोगों की धार्मिक भावनाओं को भड़काने वाले व भ्रमित करने ओ३म् नमः शिवाय, महाभारत आदि के द्वारा आर्य के नाम पर भ्रम और नंगे तथा गन्दे नाचों द्वारा भारतीय सभ्यता व संस्कृति को विकृत करने वाले कदमों का घोर विरोध करके अपना कर्त्तव्य निभाना चाहिए। आर्य समाज एक संस्था ही नहीं अपितु एक वैचारिक क्रान्ति है, आन्दोलन है। इसको अपनी पूरी शक्ति लगाकर आगे बढ़ाए, यही इच्छा व प्रार्थना है।

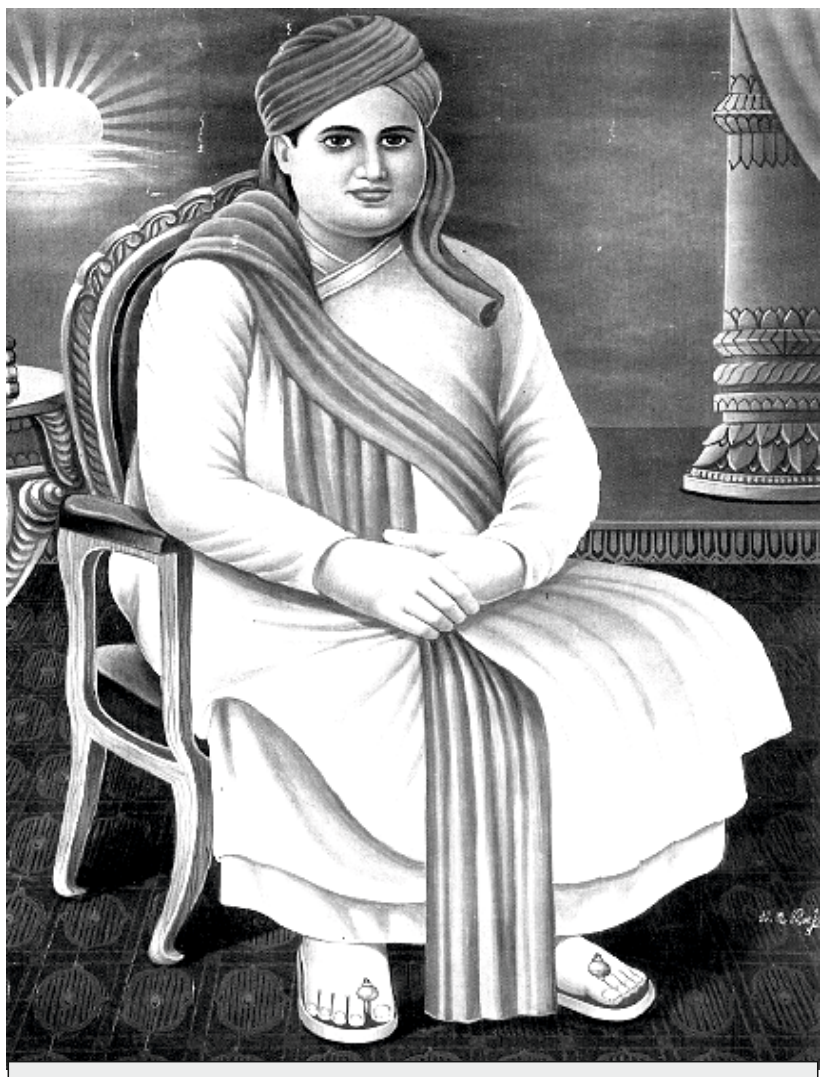

जन्म दिवस पर शत बन्दन

- राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति

उद्धारक हे दिव्य वेद के, मानवता के प्रखर प्रचारक।
आर्ष-मनीषी परम्परा के, प्रतिपादक तुम्! हे उन्नायक।
भरा धरित्री के कण-कण में तुमने वेदों का स्पन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

घोर तमाच्छादित थी वसुधा, विस्तृत था अज्ञान अंधेरा।
असुर वृत्तियों ने निर्भय हो डाला था जन मन पर डेरा।
बन प्रतिमूर्ति शौर्य-साहस की- किया विनष्ट धरणि क्रन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

बन्धन में जकड़ा था पावन, ऋषियों का यह देश महान।
सत्य सनातन शुचितर संस्कृति सहती थी अतुलित अपमान।
तरुणायी को अंगड़ायी दे- सहस जगाया जन अभिमन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

ललकारों से ऋषिवर तेरी, निकल पड़ी थी युवक टोलियाँ।
भयाक्रान्त हो गए विदेशी- शासक, सुनकर सिंह बोलियाँ।
स्वाभिमान व शौर्यशक्ति से - हुआ सुगर्वित भू कन-कन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

जाति-पांति का छुआ छूत का, भगा यहाँ से सारा भूत।
समता समरसता सहिष्णुता - से हो गए सभी अभिभूत।
हर्षोल्लास भरा अन्तर में - ज्योतिर्मय हो गया गगन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में, जगी नवल जागृति की क्रान्ति।
जल-थल में व नील गगन में, उत्प्रेरित कर दी उत्क्रान्ति।
महर्षि दयानन्द! तुमने ही - किया सत्यशिव अभिनन्दन।
जन्म दिवस पर शत बन्दन।।

- मुसाफिर खाना, सुलतानपुर (उत्तर प्रदेश)

आर्य समाज नलगोंडा में आयोजित कार्यक्रम की चित्रमय झलकियां

आर्य समाज नलगोंडा में आयोजित कार्यक्रम की चित्रमय झलकियां

पृष्ठ 2 का शेष

वेद मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है – डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा
नारी जाति को गौरव एवं प्रतिष्ठा दिलाने में महर्षि दयानन्द का अपूर्व योगदान है – डॉ. सुमेधा आचार्या
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी मानवता के सच्चे प्रहरी थे – स्वामी आदित्यवेश
वैदिक मान्यताओं को स्वयं अपनाकर प्रचारित करें आर्यजन – आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक
वैदिक संस्कृति ही सबसे प्राचीन है – धर्मपाल शास्त्री
मातृ शक्ति सन्तान निर्माण के दायित्व को समझें – बहन पूनम आर्या

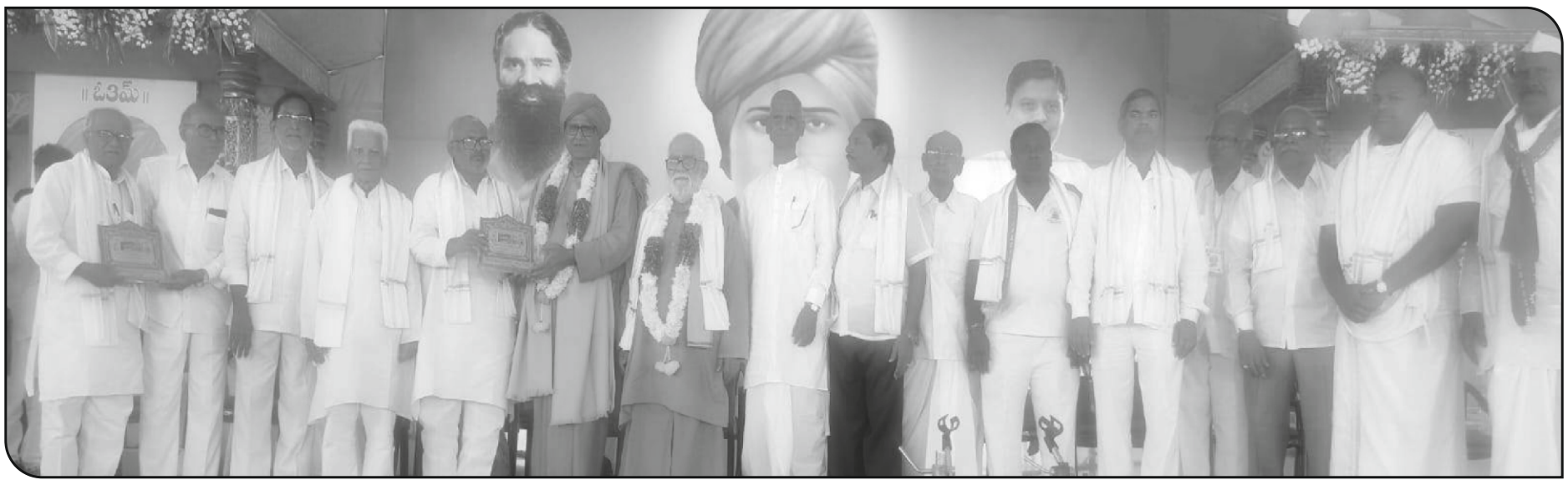

प्रेरणादाई उद्बोधन दिया इसके लिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। स्वामी जी की कृपा दृष्टि हमारे ऊपर विशेष रहती है और वे हर स्थिति में हमें अपना सम्बल प्रदान करते रहते हैं।

उद्घाटन सत्र के मुख्यअतिथि स्वामी रामदेव जी महाराज के प्रस्थान के उपरान्त भोजन अवकाश हुआ और सायं 4 बजे से 6 बजे तक नगर में विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। शोभा यात्रा में जहां हजारों आर्यजनों ने गगनभेदी नारे लगाकर आर्य समाज की जय–जयकार की वहीं वेद विद्यालय गुरुकुल मलकपेट हैदराबाद, आर्य युवती परिषद् हरियाणा, आर्य वीरदल जोधपुर, एवं स्थानीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन द्वारा नगरवासियों को आश्चर्य चकित कर दिया। शोभा यात्रा के स्वागत के लिए नलगोण्डा के बाजारों में हजारों दर्शकों की भीड़ उमड़ पड़ी। लगभग ढाई घण्टे तक चली इस शोभा यात्रा का नेतृत्व स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, श्री हरिकिशन वेदालंकार, स्वामी आदित्यवेश जी आदि के अतिरिक्त स्थानीय आर्य समाजों के पदाधिकारी कर रहे थे। शोभा यात्रा में महर्षि दयानन्द की जय के नारे और आर्य समाज अमर रहे की आवाज आकाश में गूंज रहे थे। इसी प्रकार 'वेदों का है ये ऐलान, नर और नारी एक समान।', 'जातिवाद मिटायेंगे, आर्य राष्ट्र बनायेंगे।, 'नशाखोरी हटाओ, देश बचाओ।' आदि नारे भी गुंजाये गये। शोभा यात्रा अत्यन्त प्रभावशाली रही। स्थान–स्थान पर यात्रा का स्वागत एवं सत्कार किया गया। शोभा यात्रा 6.30 बजे समाप्त हुई और उसके बाद सभा का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने अपना विचार रखते हुए कहा कि ईश्वर से प्रेम करो और अपने से मजबूत से दोस्ती करो और वह मजबूत दोस्त केवल ईश्वर ही है, इसलिए उसी से दोस्ती करके अपना जीवनयापन करें और समाज की उन्नति करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सपनों को साकार करने के लिए ईश्वर में आस्था रखते हुए सत्य मार्ग पर चलकर ही समाज का कल्याण किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी सच्चे ईश्वर भक्त थे और उन्होंने समाज में जागृति उत्पन्न करके लोगों को जागरूक करने का कार्य किया। ऐसे महामानव की 200वीं जयन्ती मनाने के लिए आज हम सब यहां एकत्रित हुए हैं यह हमारे लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि दक्षिण भारत में इस प्रकार का कार्यक्रम आयोजित करके सार्वदेशिक सभा के मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने बहुत ही सराहनीय कार्य किया है। यह कार्यक्रम अपने आपमें अविस्मरणीय रहेगा। इसके लिए मैं उनकी समस्त कार्यकारिणी एवं आर्य समाज नलगोंडा के समस्त पदाधिकारियों को बधाई देता हूँ।

कन्या गुरुकुल शिवगंज से पधारीं विदुषी बहन आचार्या डॉ. सूर्यदेवी चुतर्वेदा जी ने अपने मार्मिक विचार रखते हुए वेद मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। उन्होंने वेद ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ बताया।

तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने विषम परिस्थितियों में आर्य समाज संगठन की स्थापना करके समाज के उत्थान के लिए कार्य किया। आज हम सभी ऐसे महामानव की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज नलगोंडा का शताब्दी समारोह मनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। हम सहज ही कल्पना कर सकते हैं कि जिस समय इस आर्य समाज की स्थापना की गई थी उस समय निजाम का शासन चल रहा था, परन्तु उस विषम परिस्थिति में भी आर्य वीरों ने अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देकर समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिए कार्य किया। आज के नौजवानों को उनसे प्रेरणा लेकर महर्षि के सपनों को साकार करने के लिए किसान, मजदूर तथा अन्तिम पायदान पर खड़े लोगों के लिए कार्य करने में अपना–अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देना चाहिए।

वैदिक विद्वान आचार्य योगेंद्र याज्ञिक जी ने ओजस्वी वाणी के माध्यम से अपने विचार रखते हुए सभी को भावविभोर कर दिया। उन्होंने कहा कि अपने आपको शिक्षित करें, मनुष्य के जीवन में शिक्षा महत्वपूर्ण है। समाज को जागरूक करने के लिए लोगों को शिक्षित–दीक्षित करने का कार्य आर्य समाज सदैव से करता रहा है और आगे भी अपने मिशन को जारी रखेगा।

वैदिक विद्वान् श्री धर्मपाल शास्त्री जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि यह कार्यक्रम बहुत ही आवश्यक है। आज महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं आर्य समाज नलगोंडा का शताब्दी समारोह मनाया जा रहा है यह बहुत सुखद है, परन्तु इसके पीछे हमारा उद्देश्य अवश्य होना चाहिए। आर्य समाज नलगोंडा द्वारा किये जा रहे कार्यों में इन 100 वर्षों के अंदर जो कमी रह गई हो उसे पूर्ण करने का मजबूत संकल्प अवश्य लेना चाहिए। आज यह भी संकल्प लेना चाहिए कि हम सब एकजुट होकर महर्षि के सपनों को साकार करने में अपना–अपना योगदान अवश्य देंगे।

बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष बहन पूनम आर्या जी ने कहा कि आज हम सब आर्य समाज नलगोंडा की पवित्र भूमि पर उपस्थित हुए हैं और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती भी मनाई जा रही है यह बड़े ही सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि विचारों से ही संस्कार बनते हैं और संस्कार से संस्कृति बनती है। उन्होंने कहा मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है, इसलिए हमें अध्यात्म से जुड़कर श्रेष्ठ कार्य करते हुए जीवनयापन करने चाहिए। संस्कृति हमारी आत्मा होती है इसलिए हमें अपनी संस्कृति की रक्षा अवश्य करनी चाहिए। हमें संसार में फैले अज्ञान से बचते हुए अच्छे–अच्छे कार्य करते हुए मानवता के कल्याण के लिए कार्य करते रहना चाहिए।

आचार्य विश्वश्रवा जी ने तेलगु भाषा में अपने प्रभावशाली विचार रखते हुए स्वामी रामदेव जी की विशेष प्रशस्ति की।

दिनांक 3 मार्च, 2024 को प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक 200 कुण्डीय यज्ञ डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के उपरान्त मुख्य मंच पर समापन समारोह प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी आर्यवेश जी ने की। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, पं. धर्मपाल शास्त्री, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, आचार्या वसुधा शास्त्री, युवा विद्वान् योगेन्द्र याज्ञिक आदि के व्याख्यान एवं धर्मवती आर्या के भजनों का कार्यक्रम रहा। स्वामी आर्यवेश जी ने तीन दिवसीय आर्य महासम्मेलन का उपसंहार करते हुए प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया। प्रस्ताव में राष्ट्रीय स्तर पर नशाबन्दी लागू करने, टेलीविजन एवं गूगल आदि पर प्रसारित अश्लील चित्र एवं कार्यक्रमों पर पाबन्दी लगवाने, महर्षि दयानन्द सरस्वती के नाम पर देश की राजधानी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक संग्रहालय एवं जेवर (अलीगढ़) हवाईअड्डे का नाम महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा रखवाने, हैदराबाद आन्दोलन में पं. नरेन्द्र को जिस जेल में रखा गया था उसमें स्मारक बनवाने तथा गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करवाने की मांग रखी गई थी। स्वामी आर्यवेश जी ने इस समारोह को अत्यन्त सफल बताया और उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी की 200वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण दक्षिण भारत का यह सबसे बड़ा और प्रथम राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित हुआ है। इसके लिए कर्नाटक, महाराष्ट्र, मराठवाड़ा, तेलंगाना, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रान्तों के आर्यों को विशेष साधुवाद दिया जाता है। स्वामी जी ने देश के विभिन्न भागों से आये आर्यजनों का भी अभिनन्दन किया।

सम्मेलन में स्थानीय विधायक कोमटी रेड्डी वैंकट रेड्डी जो वर्तमान तेलंगाना सरकार में मंत्री हैं वे भी उपस्थित होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों को आगे बढ़ाने के लिए अपना पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया।

आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि यह महासम्मेलन बेहद सफल एवं प्रेरणा देने वाला रहा। सम्मेलन के सूत्रधार प्रो. विट्ठलराव आर्य जी एक जुझारू और कर्त्तव्यनिष्ठ नेता हैं। वे सुदूर दक्षिण भारत में आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में दिन–रात मेहनत करते रहते हैं। उनके कार्य एवं व्यक्तित्व को देखकर मन को बहुत ही प्रसन्नता होती है। उन्होंने कहा कि हम सभी को मिलकर प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का उत्साहवर्द्धन करते रहना चाहिए।

राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में ज्योतिषाचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती, आचार्य उदयन जी, आचार्या सविता जी, आचार्य धनंजय आदि के अतिरिक्त ठा. लक्ष्मण सिंह, श्री अशोक श्रीवास्तव, श्री रघुरामुलू एडवोकेट, श्री सत्य नारायण आर्य, आचार्य अरविन्द शास्त्री, श्री सुधाकर गुप्ता, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, श्री भंवरलाल आर्य अधिष्ठा आर्य वीरदल राजस्थान, श्री जितेन्द्र सिंह आर्य महामंत्री आर्य वीरदल राजस्थान, श्री उम्मेद सिंह आर्य संचालक आर्य वीरदल जोधपुर, श्री हरदेव सिंह आर्य उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, श्री उत्तम आर्य अध्यक्ष सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् दिल्ली, श्री धर्मेन्द्र आर्य एवं श्री घनश्याम मुरारी, श्री अशोक वशिष्ठ (दिल्ली) आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। आर्य समाज के अतिरिक्त भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के कार्यकर्ताओं ने भी उत्साह के साथ सम्मेलन में भाग लिया।

कार्यक्रम के अन्त में संन्यासियों, विद्वानों, आचार्य/आचार्यों, प्रतिष्ठित महानुभावों एवं कार्यकर्ताओं का शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया गया। कार्यक्रम के अन्त में सम्मेलन में पधारे सभी आगन्तुक महानुभावों का सार्वदेशिक सभा के मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी तथा सभा के मंत्री श्री हरिकिशन वेदालंकार जी ने आभार एवं धन्यवाद प्रगट किया। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

The Heritage of Swami Dayanand Saraswati

- B. R. Sharma Vibhakar

Swami Dayanand Saraswati was born in Tankara of Maurvi State in Saurashtra province. On Falgun Badi Dasmi every year his birthday is celebrated with great zeal. On falgun badi chaudas or the day of shiva Ratri is regarded as a day of 'Rishi Bodhotsva'. As a teenager his soul got illumined. An idea struck in his mind that there must be some other Shiva except this one made of stone, who utterly failed to defend himself from the mischief of a mouse to pollute the pindi of Shiva and stale the offerings. Look at the Vishtha and urine of the mouse making it dirty!

Actually, there was a custom (still rampant) in those days that everyone might be on fast and awoke throughout the night known as the Shiva Ratri. Mool Shankar (Swami Dayanand's earlier name) kept on awaking and watching the Shiva-Ling. He found there was no activity of Shiva-Ling, it was just in an actionless posture. It was dead sure that it was lifeless. Mool Shankar came to this conclusion that it was not a real and living Shiva. It is a fallacy, a wrong notion, a blind concept. So damn this artificial Shiva! He was certainly illumined by projecting arguments and the lagic in his mind and he started to quest and question as to where the Real Shiva was! An idea of detachment overpowered his mind.

When his father Sh. Kishan saw Mool Shankar's tendency of detachment and renunciation, he wanted to get him enchained with marriage. But one, who is a searcher for the Truth, could be enchained so? On one night he left his house when he sensed his bondage. He met many hinderances but continued to pass over them to have an horizon of Knowledge. He met many scholars and saints and discussed many questions and secrets of yoga. He went to a renowned Sanyasi named Swami Poornanand Saraswati who gave him a name of Swami Dayanand Saraswati. Now he was Swami Dayanand Saraswati to be addressed. He studied the Vedic Literature which stands by the logical appreciation. He kept aside all that was intermixed. He was widely studied person. Some body suggested him to see and get guidance from a blind Sanyasi named Virjanand Swami, who was known as the bright and illumined 'Sun of Sanskrit Grammar', in Mathura city.

When Swami Dayanand a young sanyasi of sterdy body and logical brain knocked the door of

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

Virjanand Swami, a voice came from inside with a question 'Who is there?' Swami Dayanand instantly replied, 'I have come to know sir this one as to who am I? In search of myself' I have come into your wisdom's light. The great Guru was astonished and sparkled and murmurred- 'Oh! welcome! I was really in search of such an appropriate pupil who could learn something important from me. So I am utterly pleased to have you, dear. What a fine, perfect and unparalled meeting between the Acharya and would be pupil it was!

Swami Dayanand started learning from Guru Deo Swami Virjanand Saraswati and enriched himself under his guidance. He was most dear to Acharya because of his unique calibre. He proved himself to be the truest and most failthful. He turned to the real path leading to the Real Shiva. He wrote many books and the Satyartha Prakash was one of them to declare its uniqueness with a commanding tone. Its every approach is everlasting and unbeaten. Nobody can challenge its contents. He in times of British yoke brought about the light and enthusiasm to show the path of independence to Indians and he produced many youngsters to fight the case of freedom. All the movements were imbibed with the essentials of his philosophy. Swedeshi Andolan is his product which lator on Gandhi Ji adopted. He taught us to be free without any bondage. Rana De was his first disciple.

He wrote many books in Hindi language as he declared at first that Dev Nagri (Hindi) will be the National language of Bharatvarsh.

He gave us all the perspectives of Vedic Religion and founded Arya Samaj, a body of logic and devotion. It was more helpful in achieving freedom. Having a national character there was a flood of establishing many Arya Samaj Mandirs almost in every town and city in the country and abroad. Through discussions held with other sects and matavalambis a norm of Vedic religion was set-up. They contain the glorious chapters of victories.

As a matter of fact, we have got this Maharshi Dayanand's vision which is regarded as the real heritage making a dialogue of our Vedic culture. He declared firmly 'Return to the Vedas'.

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 168वें जन्मोत्सव पर 31 कुण्डीय राष्ट्र रक्षा यज्ञ सम्पन्न
गुरूकुलीय शिक्षा प्रणाली को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पुनर्जीवित किया–स्वामी आर्यवेश
स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन प्रेरणा दायक है–डा. हर्षवर्धन (सांसद)
हमें महापुरुषों के सकारात्मक विचारों को ग्रहण करना चाहिए–आचार्य अखिलेश्वर
स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित करो –अनिल आर्य

दिनांक 22 फरवरी 2024 को केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी के 168वें जन्मोत्सव पर 31 कुण्डीय राष्ट्ररक्षा यज्ञ दर्शनाचार्या विमलेश बंसल के ब्रह्मत्व में गीता भारती स्कूल अशोक विहार, दिल्ली में संपन्न हुआ। इस अवसर पर विमलेश बंसल ने कहा कि हर्ष का विषय है कि आज हम स्वामी श्रद्धानन्द का जन्मोत्सव मना रहे हैं। ऋषि दयानन्द जी से प्रेरणा पाकर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल खुलवाए। एक रचना 'श्रद्धा का पान कराने को, स्वामी श्रद्धानन्द जी आए' सुनाकर भावविभोर कर दिया। युवा गायक श्री संजय स्वर्ण सेतिया ने ओजपूर्ण गीतों द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की साथ ही गायिका प्रवीन आर्या ने गीत प्रस्तुत किये।

मुख्य अतिथि के रूप में प्रधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस पूरे देश में मनाया जाता है, लेकिन जन्म दिवस की पहल परिषद् ने की है, इसके लिए परिषद् के अधिकारी साधुवाद के पात्र हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने घर वापिसी का अभियान चलाया, जो लोग किन्हीं कारणों से हिन्दू धर्म छोड़ गये थे उनके लिए वापिस हिन्दू धर्म में आने के लिए "शुद्धि आंदोलन" की शुरुआत की थी तथा उन्होंने अपना सर्वस्व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में लगा दिया। उनकी शिक्षा प्रणाली देशभक्त और चरित्रवान बनाने की थी। उन्होंने लुप्त होती पुरातन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित किया और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ही जालंधर में महिला कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी को भारत रत्न से सम्मानित करने के लिए सरकार से मांग करने के लिए आर्यजनों को प्रयत्नशील रहने को कहा।

सांसद डा. हर्षवर्धन ने दीप प्रज्वलित कर अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी की 168वीं जयंती पर राष्ट्र रक्षा यज्ञ किया गया यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। स्वामी जी ने शुद्धिकरण का काम करके हिन्दू धर्म में हजारों लोगों की घर वापसी कराए थे, उनका जीवन प्रेरणादायक है। हमें उन्हें नमन करते हैं।

आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज ने समारोह में उपस्थित पुण्य आत्माओं को नमन करते हुए तथा 'मधुर वेद वीणा बजाए चला जा' गीत बुलवाकर कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जन्म 22 फरवरी, 1856 को जालन्धर के तलवन ग्राम में हुआ था। वे महान स्वतंत्रता सेनानी रहे उन्होंने दिल्ली के चांदनी चौक पर रौलट एक्ट के विरुद्ध प्रदर्शन का नेतृत्व किया और अंग्रेजी सिपाहियों को छाती तान के बोला लो खड़ा हूँ गोली चला लो और उनकी निर्भीकता के आगे सिपाहियों की संगीने झुक गयी। उन्होंने आगे कहा कि हमें अपने महापुरुषों के सकारात्मक विचारों को ग्रहण करना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य पुरोहित सभा के अध्यक्ष श्री प्रेमपाल शास्त्री ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द 1922 में सिखों के "गुरु का बाग" आंदोलन का नेतृत्व किया और गिरफ्तारी दी। आज के संदर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन प्रेरणा देने वाला है वह सब कुछ होम कर सही मायनों में समाज के लिए ही जिये, वह महर्षि दयानन्द जी के सच्चे अनुगामी, स्वाधीनता, स्वदेशी, स्वराज्य, शिक्षा व वैदिक धर्म प्रचारक के लिए समर्पित रहे।

आचार्य गवेंद्र शास्त्री ने कहा कि अद्भुत प्रतिभा के धनी थे स्वामी श्रद्धानन्द, वे धर्मवीर, कर्मवीर तथा दानवीर थे। समारोह में आर्य युवकों का व्यायाम प्रदर्शन आकर्षण का केन्द्र रहे।

मंच का कुशल संचालन करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल आर्य ने कहा भारतीय इतिहास में पहली बार दिल्ली की जामा मस्जिद के मिम्बर पर गैर मुस्लिम स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेद मंत्रों के साथ हिन्दू–मुस्लिम एकता का संदेश दिया। यह सामाजिक समरसता का अनमोल उदाहरण है। दलितों के उत्थान के लिए भी अनेकों विद्यालय खोले और मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जन्मोत्सव के अवसर पर केन्द्र सरकार से मांग की कि नया बाजार स्थित स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया जाये।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री यशोवीर आर्य ने युवाओं से उनके गुणों को आत्मसात करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर सर्वश्री योगेश वर्मा पार्षद, ओम सपरा, अमर नाथ बत्रा, नरेंद्र आर्य सुमन, योगेश वर्मा, पूनम भारद्वाज ने भी अपने विचारों से स्वामी श्रद्धानन्द जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

इस अवसर पर मुख्य रूप से सर्वश्री प्रवीण आर्य, कुसुम भंडारी, देवेन्द्र भगत, रामकुमार आर्य आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में परिषद् के महामंत्री श्री महेन्द्र भाई ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। शांति पाठ एवं ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- www.facebook.com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन जीन्द सफलता के साथ सम्पन्न

आर्य समाज पूरे विश्व के कल्याण की भावना से कार्य करता है – स्वामी आर्यवेश

पूरे देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू हो – स्वामी रामवेश

महर्षि दयानन्द जी ने किसानों को राजाओं का राजा बताया है – स्वामी आदित्यवेश

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जन्म जयन्ती एवं स्वामी श्रद्धानन्द तथा राम प्रसाद बिस्मिल की स्मृति में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नेता स्वामी आर्यवेश जी के निर्देशन एवं नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी के संयोजन में महर्षि दयानन्द पार्क, अर्बन स्टेट, जीन्द में हरियाणा प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 18 फरवरी, 2024 को स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता तथा स्वामी रामवेश जी के कुशल संयोजन में सफलता के साथ हुआ सम्पन्न। कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या, हाईकोर्ट के एडवोकेट श्री रणधीर सिंह रेढू सोनीपत, कांग्रेस नेता श्री अनूप मलिक, श्री पवन गर्ग जीन्द, आर्य भजनोपदेशक श्री कुलदीप आर्य बिजनौर, श्री इन्द्रजीत आर्य, आर्य समाज नरवाना, श्री सुनील एडवोकेट, श्री देवेन्द्र लोहान एडवोकेट, श्री जयभगवान शास्त्री, श्री जगफूल सिंह ढिल्लो, श्री वेद प्रकाश आर्य, स्वामी विजयवेश, श्री दलबीर सिंह आर्य अध्यक्ष आर्य युवक परिषद् हरियाणा, श्री सत्य प्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष आर्य समाज नागौरी गेट, हिसार आदि के अतिरिक्त अन्य महानुभाव विशेष रूप से उपस्थित रहे।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र के लिए सर्वात्मना समर्पित क्रांतिकारी संगठन है। आर्य समाज मनुष्यों के साथ–साथ समस्त जीव–जन्तुओं के उपकार एवं कल्याण की भावना से कार्य करता है और अपने स्थापनाकाल से कार्य करते हुए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहा है। यह वर्ष स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के जन्म का 200वाँ वर्ष है। हम केन्द्र सरकार से मांग करते हैं कि देश की राजधानी दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक बनायें तथा उस स्मारक में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी से सम्बन्धित एवं उनसे प्रेरणा प्राप्त करने वाले क्रांतिकारियों के जीवन कृत्यों को प्रदर्शित किया जाये, जिससे युवा पीढ़ी उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से प्रेरणा ले सकें।

कार्यक्रम के संयोजक स्वामी रामवेश जी ने कहा कि केन्द्र सरकार पूरे देश में नशाबन्दी के खिलाफ कड़े कानून बनाकर लागू करे जिससे सम्पूर्ण देश को नशामुक्त बनाया जा सके। युवाओं को सही राह दिखाई जा सके। उन्होंने कहा कि नशा युवाओं के साथ–साथ पूरे देश को बर्बाद करने का कार्य कर रहा है।

तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने विचार रखते हुए कहा कि केन्द्र सरकार को किसानों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़कर उनकी बात सुननी चाहिए और स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट को लागू करते हुए किसानों को एम.एस.पी. की गारण्टी देनी चाहिए जिससे उनके परिवारों में भी खुशहाली आ सके और उन्हें उनके मेहनत का फल मिल सके। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने किसानों को राजाओं का राजा बताया है। भारत देश कृषि प्रधान देश है इसलिए देश का किसान खुशहाल होगा तभी हमारा देश भी खुशहाल हो सकता है।

श्री अनूप मलिक ने कहा कि आर्य समाज संगठन ने देश के लिए आजादी के आन्दोलन से लेकर अनेक समाज सुधार आन्दोलन चलाकर समाज एवं राष्ट्र के लिए अप्रतिम कार्य किये हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के आन्दोलनों को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

श्री पवन गर्ग ने कहा कि सामाजिक कार्यों के लिए आर्य समाज हमेशा से अग्रणी भूमिका निभाता आया है और आगे भी निभाता रहेगा। ज्यादा से ज्यादा युवाओं को आर्य समाज से जोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि आज बच्चों को संस्कारित करने की आवश्यकता है, इस कार्य को पूर्ण करने में हमारी माताओं को अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए और अपने बच्चों को संस्कारित करने का कार्य करना चाहिए।

सार्वदेशिक आर्य युवती परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन प्रवेश आर्या ने अपने विचार रखते हुए कहा कि हमारा अधिक से अधिक प्रयास है कि देश की बेटियों की सुरक्षा की जा सके। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी टिटौली, रोहतक में 5 से 17 मार्च, 2024 तक बेटी बचाओ महायज्ञ का आयोजन किया गया है, इसमें आप सभी सादर आमंत्रित हैं। इस महायज्ञ में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर सहयोगी बनें।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेशाध्यक्ष श्री दलबीर सिंह आर्य ने कहा कि इस वर्ष हरियाणा में 100 युवा निर्माण शिविरों का आयोजन किया जायेगा। गुरुकुल धीरणवास में एक हजार युवाओं का शिविर लगेगा।

श्री रणधीर सिंह रेढू ने कहा कि आर्य समाज को जीन्द में और ज्यादा सक्रिय किया जायेगा। कार्यक्रम के मंच का संचालन श्री जगफूल सिंह ढिल्लो ने किया।

इस अवसर पर कई सामाजिक कार्यकर्ताओं का स्वागत भी किया गया। डॉ. राजपाल जाजवान, श्री वेदपाल अलेवा, श्रीमती जगमती मलिक, श्री देवेन्द्र सहारन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। कार्यक्रम में श्री राममोहन राय एडवोकेट, श्री दीपक कथूरिया, श्री करण सिंह रेढू, श्री सज्जन राठी, श्री अशोक आर्य, श्री जयपाल राजौंद, श्री मनीष नरवाल, श्री सूरजमल जुलानी, श्री टेकराम सरपंच, श्री सूरजमल आर्य, श्री वीरेन्द्र आर्य खटकड़ सहित कई गांवों के आर्य समाज के अधिकारी शामिल रहे। कार्यक्रम की व्यवस्था में श्री रणवीर राठी व श्री पानू का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।